Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt.Prof.(Guest)Deptt.of Economics, D.B.College, jaynagar.Class:-B.A.part-1(Hons.)Date :-09-12-2020.Lecture n.-15.

Topic:- भारत की राष्ट्रीय आय: प्रवृत्तिया एवं क्षेत्रीय वितरण (National Income of india:Trends and Sectoral Distribution):-

राष्ट्रीय आय का अर्थ किसी देश की राष्ट्रीय आय उस देश में वस्तुओं तथा सेवाओं की उत्पत्ति का वार्षिक योग होता है, इसका अभिप्राय यह है कि देश के विभिन्न उद्योगों तथा व्यवसायियों द्वारा जितनी उत्पत्ति एक वर्ष में होती है, उसका मूल्यांकन कर लिया जाता है। इस राशि में से हास (Depreciation) की राशि घटा दी जाती है। परिणामस्वरूप, जो राशि प्राप्त होती है, वह देश की राष्ट्रीय आय कहलाती है।

*** राष्ट्रीय आय लेखा(National income Accounting):- भारत में राष्ट्रीय आय निम्नलिखित पांच प्रकार से प्रकट की जाती है जिसे निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते है:-**

1). सकल राष्ट्रीय उत्पादन अथवा सकल घरेलू उत्पाद (Cross National product or GNP or Gross Domestic product)सकल राष्ट्रीय से अर्थ एक वर्ष में उत्पादित होने वाली सभी वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य के जोड़ से हैं । इसमें स्थाई संपत्तियों पर होने वाले हास(Depreciation) को नहीं घटाया जाता है।

2). शुद्ध उत्पादन अथवा शुद्ध घरेलू उत्पाद(Net national product or NNP or NDD):- सकल राष्ट्रीय उत्पादन में हास (Depreciation)घटाने के बाद जो शेष रहता है, वह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन या शुद्ध घरेलू उत्पाद कहलाता है। इसे गणितीय रूप में इस प्रकार से देखा जा सकता है-ल

NNP or NDP=GNP- Depreciation.

इस शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन से देश में उपभोग बचत निवेश के लिए उपलब्ध राशि आदि का बोध होता है।

3). राष्ट्रीय आय इसे साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय आए भी कहते हैं इसकी गणना हेतु शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन में से अप्रत्यक्ष

करों को घटा दिया जाता है किंतु सरकार द्वारा दी गई सहायता(Subsidies) जोड़ दी जाती है।

4). व्यक्तिगत आय या घरेलू उत्पादन(Personal income or net Domestic product):- यह आय, वह आय हैं जो कि वास्तव में देश की जनता द्वारा एक वित्तीय वर्ष में प्राप्त की जाती है। इसे इस रूप में व्यक्त किया जा सकता है-

[व्यक्तिगत आय= राष्ट्रीय आय- निगम व कंपनियों पर कर + कंपनी के अवितरित लाभ + प्रोविडेंट फंड में अंशदान-(सरकार द्वारा सामाजिक सुधार पर व्यय)]

5) व्यय योग्य आय (Disposable Income):- इसका तात्पर्य जनता के पास शुद्ध आय से है, जिसे जनता व्यय करने को तत्पर है। ऐसी आय की गणना के लिए व्यक्तिगत आय में से व्यक्तिगत प्रत्यक्ष करो को धन दिया जाता है ।

* भारत में राष्ट्रीय आय के अनुमान (Estimation of national Income in India):-भारत में स्वतंत्रता से पूर्व राष्ट्रीय आय ज्ञात करने की विशेष आवश्यकता महसूस नहीं की गयी. भारत की राष्ट्रीय आय का अनुमान सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने वर्ष

1868 में प्रकाशित अपनी पुस्तक"Poverty and British Rule in india) में किया उनके अनुसार भारत की प्रति व्यक्ति आय ₹20 वार्षिक भी एवं सकल राष्ट्रीय आय 340 करोड रुपए थी।

भारत के स्वतंत्र होते ही सरकार ने भारत की राष्ट्रीय आय ज्ञात करने की व्यवस्था करने का निश्चय किया अतः 4 अगस्त 1949 को कोलकाता स्थित भारतीय संख्यिकी संस्थान के प्रोफेसर पी.सी. महालनोविस के अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय आय समिति का गठन किया गया इस समिति ने अपनी प्रथम रिपोर्ट 15 अप्रैल 1951 को प्रस्तुत की इसके पश्चात अब भारत में राष्ट्रीय आय की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन सी.एस.ओ. द्वारा नियमित रूप से की जाती है।